

डॉ. गैरी मीडर्स, ईश्वर की इच्छा को जानना, सत्र 10, विश्वदृष्टि और मूल्यों के आधार पर हमारे निर्णयों को संसाधित करना

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

खैर, आपका फिर से स्वागत है। और यदि आप अपनी विषय-सूची देख रहे हैं और अपनी स्लाइड्स और नोट्स को उचित रूप से पुनः प्राप्त कर रहे हैं, तो आप जानते हैं कि हम व्याख्यान 10 पर आ गए हैं, जो कि प्रसंस्करण के बारे में थोड़ा सोचने वाला व्याख्यान है। कुछ समीक्षा और दोहराव है, लेकिन हम मुद्दों के बारे में ज़ोर से बात करने जा रहे हैं, और मैं उन चीज़ों के बारे में ज़ोर से सोचने जा रहा हूँ जो आप कुछ मुद्दों से संबंधित निर्णय का उत्तर देने का प्रयास करने के लिए करेंगे।

तो, आप अपने नोट पैकेज में व्याख्यान 10, जो कि GM10 है, को प्रोसेस कर रहे हैं। मैंने अपनी पुस्तक, डिजीजन-मेकिंग गॉड्स वे में आपके लिए नोटिस डाले हैं, जिन्हें आप वास्तव में नहीं देख सकते हैं। मैं आपको बहुत कुछ दिखाऊंगा क्योंकि हम यहाँ हैं।

ओह, मैं वहाँ से बाहर नहीं आऊँगा। यहाँ गड़बड़ हो रही है। मैं तुम्हें करीब से दिखाऊँगा।

यह रहा, ईश्वर के तरीके से निर्णय लेना, ईश्वर की इच्छा जानने का एक नया तरीका। यह बेकर प्रेस से है, जो शीर्षक बनाता है। मैं इसका कोई दूसरा शीर्षक रखता, लेकिन फिर भी, उन्होंने यही किया।

बेकर के साथ यह अब छपना बंद हो गया है। हालाँकि, यह लोगोस, अंग्रेजी और स्पेनिश में छपा हुआ है। जब मैं इन व्याख्यानों को पूरा कर लूँगा, तो मैं नए संस्करणों को फिर से लिखना और प्रकाशित करना शुरू करूँगा, जिसमें वह सब कुछ शामिल होगा जो मैं यहाँ कर रहा हूँ और फिर कुछ और।

यह लगभग उसी तरह अनुक्रमित होगा जैसा कि हम यहाँ कर रहे हैं। हालाँकि, चूँकि यह एक लिखित पुस्तक है, इसलिए मुझे पुनरावृत्ति के कुछ शैक्षणिक पहलुओं को कम करना होगा जो कक्षा में महत्वपूर्ण हैं, हमेशा इतनी महत्वपूर्ण पुस्तक नहीं। इसलिए उस पर नज़र रखें।

इसे पूरा करने में और इन दिनों मैं कैसे आगे बढ़ता हूँ, इसमें कुछ समय लगेगा, लेकिन हम देखेंगे कि यह कैसे होता है। ठीक है, निर्णय प्रक्रिया। विश्वदृष्टि और मूल्य मॉडल हमें कैसे मार्गदर्शन करते हैं? मैंने कई बार कहा है कि यह आप पर हावी हो रहा है।

खैर, क्योंकि यह हमें एक ग्रिड देता है। हमने आपको जो सड़क की तस्वीर दी है उसमें हमने वह ग्रिड देखा है। यह हमें एक ग्रिड देता है जिसके द्वारा हम व्याख्या करते हैं।

हम अपने जीवन और दुनिया की व्याख्या अपने विश्वदृष्टिकोण और मॉडल के अनुसार करते हैं, और हम दूसरी तरफ अर्थ निकालते हैं। यह हमारा अवधारणात्मक सेट है। यह वह नई भाषा है जो मैं आपको दे रहा हूँ, लेकिन ऐसे विषय हैं जो उस वाक्यांशविज्ञान का उपयोग करते हैं, हमारा अवधारणात्मक सेट।

इसका मतलब है कि आप दुनिया को किस तरह देखते हैं। यह विश्वदृष्टि परिसर का एक हिस्सा है। एक अवधारणात्मक सेट जिससे अर्थ निकलता है। हम इसे उसी तरह अर्थ देते हैं।

अब, मैं यहाँ नहीं रुकने वाला क्योंकि आपने यह नाटक देखा है। आपके सभी निर्णयों के उत्तर उस अवधारणात्मक सेट से होकर गुजरते हैं। जैसा व्यक्ति सोचता है, वैसा ही वह होता है।

शास्त्र में कई मौकों पर इस बात की ओर इशारा किया गया है, और यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। ठीक है, यहाँ एक और छोटा सा चार्ट है जो मुझे नहीं लगता कि मैंने आपको पहले दिया है, लेकिन मुझे लगता है कि यह उपयोगी है। इसकी नींव में, परमेश्वर की इच्छा प्रकट होती है।

सबसे ऊपर, यह कहता है कि परमेश्वर की इच्छा ईश्वरीय विवेक है। खैर, आप वहाँ कैसे पहुँचते हैं? ठीक है, परमेश्वर की इच्छा संप्रभु और नैतिक इच्छा के रूप में प्रकट होती है। इसके अलावा, ईश्वरीय विवेक उस पर काम करता है, और परमेश्वर की इच्छा लागू होती है।

इसलिए, रहस्योद्घाटन से लेकर अनुप्रयोग तक, हमारे पास यहाँ एक ट्रेन चल रही है जिसे हमें एक दूसरे के साथ संपर्क में रखने की आवश्यकता है। यह शिक्षण इरादे से लेकर धार्मिक विश्लेषण तक जाती है। यह कुछ हद तक प्रत्यक्ष निहित और रचनात्मक निर्माण पर चार्ट की तरह है।

आप नीचे से शुरू करते हैं, पाठ के शिक्षण उद्देश्य से लेकर पाठ के धार्मिक विश्लेषण तक। यहाँ भी यही बात सच है। इसलिए मैंने आपको कई चार्ट दिए हैं।

अगर आपको पावरपॉइंट नहीं मिलते हैं लेकिन पीडीएफ मिलते हैं, तो आप कम से कम उन्हें खुद ही लिख सकेंगे। अगर आप इन पर क्रेडिट के लिए कोने में कुछ लिख दें तो मैं बहुत आभारी रहूँगा, लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप उनका इस्तेमाल करें और अगर यह आपके लिए काम करता है तो अपने मंत्रालय को बढ़ाएं। अब, मेरी किताब में एक अध्याय है जिसका नाम है बॉब के बारे में क्या? अब, यह बहुत से लोगों के लिए कोई मायने नहीं रखेगा।

यह 1991 की एक फिल्म थी, जिसमें बॉब नाम के एक व्यक्ति के बारे में बताया गया था, जिसका असली नाम बिल मुरे था। वह एक हास्य अभिनेता है, एक बहुत ही दिलचस्प हास्य अभिनेता, और रिचर्ड ड्रेफस। रिचर्ड ड्रेफस एक मनोवैज्ञानिक थे, और बिल मुरे बॉब थे, और वह डॉ. ड्रेफस के मरीज थे।

फिल्म में यह दृश्य कुछ इस तरह है: बिल मुरे खुद कुछ नहीं कर सकते। उन्हें हमेशा डॉक्टर से बात करनी पड़ती है।

उसे हमेशा ड्रेफस के पास जाना पड़ता है और कहना पड़ता है, और मुझे नहीं पता कि क्या करना है। वह ड्रेफस पर इतना निर्भर हो गया कि वह खुद के लिए सोच नहीं पाता। लेकिन फिल्म में हर तरह के अजीबोगरीब मोड़ और मोड़ हैं।

आप इसे इंटरनेट पर पा सकते हैं, और इसे देखकर आपको मज़ा आएगा। लेकिन दिन के अंत में, वह डॉक्टर को पागल कर देता है। डॉक्टर उससे दूर जाने की कोशिश में शहर छोड़ देता है।

वह आता है, और डॉक्टर की बेटी से शादी भी कर लेता है क्योंकि वह डॉक्टर से दूर नहीं जा सकता। वह पूरी तरह से डॉक्टर पर निर्भर है। खैर, भगवान चाहता है कि हम उस पर निर्भर रहें, लेकिन वह इसे अलग तरीके से करता है।

वह इसे उसी तरह से करता है जिस तरह से हम इसके बारे में सोचते हैं और इससे निपटते हैं। परमेश्वर का मार्गदर्शन व्यक्तिगत है, लेकिन यह निजीकृत नहीं है। हम प्रक्रिया करते हैं।

हमारे पास धर्मग्रंथों में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है जहाँ हर छोटी बात या हर बड़ी बात का ज़िक्र हो, मेरा मतलब है, बहुत सारी बड़ी बातें हैं। मुझे किससे शादी करनी चाहिए? मुझे किस कॉलेज में जाना चाहिए? मुझे किस तरह का करियर अपनाना चाहिए? क्या मुझे अपना करियर बदलना चाहिए? या मुझे चर्च जाना चाहिए? इस तरह के सभी सवाल उठते हैं। लेकिन भगवान ने इसे निजी बनाने की कोई व्यवस्था नहीं दी है।

उन्होंने विश्वदृष्टि और मूल्यों के माध्यम से निर्णय लेने की एक प्रणाली दी है। और इसमें से कुछ नैतिक मुद्दा नहीं है। इसलिए, हमारे पास चुनने की स्वतंत्रता है, लेकिन वह विकल्प कुछ ऐसा होना चाहिए जो आपके भीतर और आपकी अपनी क्षमताओं और विश्वदृष्टि और मूल्यों के भीतर काम करे।

मार्गदर्शन व्यक्तिगत है लेकिन निजीकृत नहीं है। इसके अलावा, हमें अपने कार्यों और निर्णयों की जिम्मेदारी लेने की आवश्यकता है। और इसलिए इसका मतलब है कि कभी-कभी जिम्मेदारी लेना।

मैं इस बारे में बहुत महत्वाकांक्षी था, या फिर मेरे पास भव्यता के दर्शन थे और मैं इसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। आत्म-समझ और स्वीकारोक्ति समय-समय पर आत्मा के लिए अच्छी होती है। और बॉब ने भी इसका सामना किया, लेकिन यह अजीब है कि वह वहाँ कैसे पहुंचा।

बाइबिल के रहस्योद्घाटन से विवेक तक की प्रक्रिया है। और यही वह है जिसका हम अनुसरण करना चाहते हैं, एक से दूसरे की ओर बढ़ना, कोई मध्यस्थ नहीं। ठीक है, विवेक कौशल विकसित करना।

अपनी परंपराओं सहित अपनी पूर्वधारणाओं के बारे में आत्म-आलोचनात्मक बनें। इसमें आपका व्यक्तित्व भी शामिल है। इसमें सब कुछ शामिल है।

मेरे दोस्तों, जीवन में ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जो ऐसी परिस्थितियों में पहुँचते हैं जहाँ वे वास्तव में आत्म-आलोचनात्मक हो जाते हैं, जहाँ आप खुद को जानते हैं। आप खुद को नहीं जान पाएँगे यदि आपके पास ऐसा कोई संदर्भ नहीं है जिसमें आपके पास कुछ बहुत ही प्यारे दोस्त हों जिनसे आप कह सकें, क्या आप कृपया मुझे मेरे बारे में बताएँगे? आप मुझे कैसे देखते हैं? आप मुझे कैसे अनुभव करते हैं? क्या आप मुझे पसंद करते हैं? क्या आपको वे चीज़ें पसंद हैं जो मैं करता हूँ? क्या आपको लगता है कि मैं पागल हूँ? या आपको लगता है कि मेरे पास अच्छे विचार हैं? दूसरे शब्दों में, हमें खुद से बाहर किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो हमें आत्म-आलोचनात्मक होने में मदद करे। अब, हम शास्त्रों और उनकी शिक्षाओं को ले सकते हैं और आत्म-आलोचनात्मक हो सकते हैं।

मैं यह नहीं करता, मैं वह करता हूँ, लेकिन हमें लोगों की ज़रूरत है। और यह जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है कि आप मूल्यांकन में रुचि नहीं रखते हैं। फिर, आप बढ़ने में रुचि नहीं रखते हैं।

आपको अपने पूर्वधारणाओं के साथ संपर्क में रहना होगा, उन चीज़ों के साथ जिनका आप स्वाभाविक रूप से निर्णय लेने के लिए उपयोग करते हैं, उदाहरण के लिए। कुछ लोग बहुत जल्दबाज़ी करते हैं। उन्हें यह जानने की ज़रूरत है कि वे बहुत जल्दबाज़ी कर रहे हैं।

कुछ लोग बहुत ज़्यादा सोचते हैं। हम इसे एनालिसिस पैरालिसिस कहते हैं। उन्हें बताया जाना चाहिए।

आत्म-आलोचना विवेकपूर्ण प्रक्रिया की नींव है ताकि हम खुद को इतना अच्छी तरह से जान सकें कि हम शब्दों को जान सकें, ईश्वर को जान सकें, उनके शब्दों को जान सकें, आमीन। इसलिए, और आपकी परंपराओं के बारे में, आपको इसके बारे में आत्म-आलोचनात्मक होना चाहिए। बैप्टिस्ट होना, या कैथोलिक होना, या प्रोटेस्टेंट होना, या प्रेस्बिटेरियन होना, या जो भी हो, किस तरह से आपको प्रभावित करता है? यह आपको कैसे प्रभावित करता है? बाइबल को उसके संदर्भ में जानें।

आत्म-आलोचनात्मक बनें और बाइबल को जानें। यह जीवन भर की कोशिश है। हे भगवान, मेरा मतलब है, मैं इस बात से अभिभूत हूँ कि वास्तव में पवित्रशास्त्र को जानना क्या मायने रखता है।

और मैं इस बात से बहुत निराश हूँ कि मैं पादरी और अन्य तथाकथित जानकार ईसाइयों से बाइबल के बारे में उनके ज्ञान के स्तर के बारे में क्या देखता हूँ। वे इसे सामान्य रूप से जानते हैं। वे जानते हैं कि यह सामान्य नैतिक शिक्षा है, लेकिन उनके पास संदर्भ साबित करने के बारे में कोई सुराग नहीं है जो किसी निर्णय पर प्रकाश डाल सके।

खैर, अगर वे इसे देखेंगे, तो उन्हें यह पसंद आएगा। मैंने भी ऐसा होते देखा है। इसलिए आत्म-आलोचनात्मक बनें, अपनी बाइबल को जानें और उस पर काम करें।

आपको शुरुआत करनी होगी। आपके पास संसाधन होने चाहिए। आप यह सिर्फ इंटरनेट से नहीं कर सकते।

आप इसे अपने आप नहीं कर सकते, यह तो तय है। अब, अगर आप दुनिया में ऐसी स्थिति में हैं, जहाँ आप इन टेपों को सुन रहे हैं, जहाँ आपके पास इन चीज़ों तक पहुँच नहीं है, तो अगर आपके पास इंटरनेट तक पहुँच है, तो यह मददगार हो सकता है, लेकिन इसका इस्तेमाल करना आपके लिए खतरनाक भी हो सकता है। मुझे नहीं पता।

लेकिन सच तो यह है कि आपको पवित्रशास्त्र को जानना होगा। एक अच्छे शब्दकोश से शुरुआत करें। मैंने आपको एर्डमैन की बाइबल की डिक्शनरी के बारे में बताया था।

यह यही है। मैं इसे तुम्हें दिखाता हूँ। और यह बाइबल है, एक खंड वाली बाइबल डिक्शनरी।

और मैं लोगों को इसकी सलाह देता हूँ क्योंकि आप यहाँ जाकर बहुत सी चीज़ों के जवाब पा सकते हैं। यहाँ फिर से, मैं इसे थोड़ा और करीब से बताऊंगा। एर्डमैन की बाइबल की डिक्शनरी।

ध्यान दें कि यह सिर्फ शब्दों के बारे में नहीं है; यह शब्दों पर लेखों के बारे में है। इस पुस्तक में बाइबल की हर पुस्तक का परिचय है। बाइबल के हर शब्द को किसी न किसी तरह से इस पुस्तक में शामिल किया गया है।

सभी नाम, स्थान। कुछ धार्मिक मुद्दे हैं, लेकिन उनमें से ज्यादातर उन शब्दों से जुड़े हैं जो वास्तव में बाइबल में इस्तेमाल किए गए हैं। बेशक, यह अंग्रेज़ी बाइबल से जुड़ा है।

इसलिए एर्डमैन की बाइबल डिक्शनरी आपके लिए एक बहुत बड़ा शिक्षण उपकरण हो सकती है, अगर आप इसे किसी तरह समझ सकते हैं। बाइबल आपके लिए लिखी गई थी, लेकिन आपके लिए नहीं। आप इस अवधारणा को समझ सकते हैं।

यह हमारे लिए लिखा गया था, लेकिन हमें नहीं। देखिए, उदाहरण के लिए, पत्रों को ही लें। पत्र पत्र होते हैं।

हम उन्हें पत्र कहते हैं। वे प्रेरितों की पत्नियाँ नहीं हैं, लेकिन वे पत्र हैं। वे प्राचीन दुनिया में पत्र हैं।

और वे दिखने में, और काम करने में प्राचीन दुनिया के पत्रों जैसे लगते हैं, जिनमें अभिवादन, समापन और मुख्य भाग और इस तरह की चीज़ें होती हैं। वे इफिसुस, कुलुस्से और फिलेमोन के समुदायों को एक व्यक्ति के रूप में लिखे गए थे। 1 यूहन्ना एशिया माइनर के चर्चों को लिखा गया एक सामान्य पत्र है, जहाँ यूहन्ना और तीमुथियुस मार्गदर्शक थे, खास तौर पर पौलुस के चले जाने के बाद तीमुथियुस।

तो, यह आपके लिए लिखा गया है, लेकिन आपके लिए नहीं। आपको यह समझना होगा कि उन व्यक्तियों के लिए इसका क्या मतलब है, इससे पहले कि आप बता सकें कि यह आपके लिए क्या मायने रखता है। यह आसान नहीं है।

और फिर भी, अगर हम बाइबल का इस्तेमाल किसी के खिलाफ़ करने जा रहे हैं तो यह हमारी ज़िम्मेदारी है। पहला कुरिन्थियन एक ऐसी किताब है जिसमें यह बहुत प्रमुखता से लिखा गया है। मेरे पास 1 कुरिन्थियन पर लगभग 30 व्याख्यान हैं, 30 घंटे के व्याख्यान, और मैं कम से कम सतही तौर पर कहीं तो मैं सिर्फ़ शुरुआत ही कर रहा हूँ।

लेकिन आपको न्यायालयों और कई अन्य मुद्दों, उपहारों, इत्यादि के बारे में कुछ व्याख्यानों को देखना चाहिए और सीखना चाहिए कि उनके लिए इसका क्या मतलब था। आप न्यायालयों के बारे में 1 कुरिन्थियों का उपयोग नहीं कर सकते और कह सकते हैं कि यह आपके न्यायालय हैं। वे रोमन न्यायालय थे।

वहाँ अमेरिकी अदालतें नहीं थीं। वे जर्मन अदालतें नहीं थीं। हर अदालत प्रणाली अलग होती है।

और रोम में वे लोग थे जिन्हें वे कष्टदायक मुकदमेबाजी कहते थे। रोमन न्यायालय उन लोगों के पक्ष में थे जिनके पास प्रतिष्ठा थी, और उन लोगों पर बहुत कठोर दंड लगाया जाता था जिनके पास प्रतिष्ठा नहीं थी। इसलिए, बाइबल आपके लिए लिखी गई थी, लेकिन आपके लिए नहीं।

आपको इस तरह से काम करना होगा और इसे समझना होगा। इसके अलावा, बिना संदर्भ वाला पाठ एक बहाना है। हमने पहले 1 कुरिन्थियों 5.22 के बारे में बात की थी।

सभी रूपों से बचें। इसका मतलब है हर तरह की बुराई। वहाँ, आप अपने बाइबल व्याख्यान पर वापस जा सकते हैं और देख सकते हैं कि आपके पास जो भी चार या पाँच मुख्य संस्करण हैं, उनकी तुलना कैसे करें ताकि आप शब्दों के अधिक हाल के अनुवाद देख सकें जो आपको अतीत की गलतियाँ न करने में मदद करेंगे।

इसके अलावा, अपने विश्वदृष्टिकोण के बारे में। कभी-कभी बैठ कर कुछ बातें लिखिए। अपने विश्वदृष्टिकोण के बारे में एक डायरी बनाइए, कि आपका विश्वदृष्टिकोण आज आपके साथ कैसे काम कर रहा है, और आपने क्या सीखा है जिसे आपने विश्वदृष्टिकोण में शामिल किया है।

आपका मस्तिष्क एक कंप्यूटर की तरह है। आपको इसमें सॉफ़्टवेयर डालते रहना होगा और समय-समय पर इसे अपडेट करना होगा ताकि यह अच्छी जानकारी निकाल सके। इसे अपनाएँ।

अपने मूल्यों को पहचानें और उन्हें स्पष्ट करें। कुछ समय पर ऐसा करना अच्छी बात है। क्रिसमस के व्यावसायीकरण के कारण कुछ स्थानों पर क्रिसमस एक अच्छी बात हो सकती है।

और यहां तक कि, क्या हम कल्पना को महत्व दे सकते हैं? सांता क्लॉज़ एक कल्पना है। वॉरेन विर्सबे, वह नाम जो आप शायद नहीं जानते, एक महान उपदेशक थे। वॉरेन विर्सबे ने जिन चीज़ों के बारे में लिखा उनमें से एक बच्चों के लिए कल्पना का महत्व था।

हम जानते हैं कि यह वास्तविक नहीं है। और इस तरह की बातें। लेकिन कल्पना का एक पहलू है जो एक बच्चे के लिए बहुत मूल्यवान हो सकता है जो अंततः उससे आगे निकल जाएगा।

इससे समय-समय पर कुछ वयस्कों को नुकसान नहीं होगा। अपने मूल्यों को पहचानें और उन्हें स्पष्ट करें। साथ ही, निर्णय लेने की प्रक्रिया को भी लागू करें।

और यही वो चार्ट है जो मैंने आपको दिया है। और यहीं पर आपको बड़े चार्ट की ज़रूरत है। आप इसे कभी भी कंप्यूटर स्क्रीन पर नहीं देख पाएँगे।

लेकिन अगर आप एक पल के लिए उस चार्ट को लें और फिर से देखें। मैंने पिछली बार आपको इसके बारे में थोड़ा और विस्तार से बताया था। मेरा इरादा यही था, इसलिए मैं ज़्यादा कुछ नहीं कहना चाहता।

लेकिन उन मुद्दों को लें जिनका आप सामना कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि आप ऐसे देश में हैं जहाँ आपका ईसाई होना गैरकानूनी है। या हो सकता है कि कोई व्यक्ति इन टेपों को सुन रहा हो।

जहाँ आप खुद को ईसाई मानने के कारण जेल जा सकते हैं, यह आपके लिए एक चुनौती है। आप परमेश्वर को प्रसन्न करने के मामले में इससे कैसे निपटेंगे? और मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आपको वहाँ भागकर यह कहने की ज़रूरत है कि देखो, मैं एक ईसाई हूँ।

आपको यह सोचने की ज़रूरत है कि एक मसीही के तौर पर आपके लिए क्या उचित कदम है। और इसमें आपका परिवार भी शामिल है। आपके रिश्तेदार भी शामिल हैं।

आपके सामने कई तरह की चुनौतियाँ हैं जिनके बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है। लेकिन आप इन चुनौतियों से निपटने के लिए अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्य प्रणाली के माध्यम से काम कर सकते हैं, ताकि आप इन चुनौतियों से यथासंभव बेहतर तरीके से निपट सकें। हो सकता है कि आपकी ये बातें सुनने वाला कोई अमीर व्यक्ति हो।

मान लीजिए कि आप डॉक्टर या वकील या कोई और हैं, और मेरी कक्षाओं में बहुत से डॉक्टर और वकील हैं जो सिर्फ अतिरिक्त शिक्षा चाहते हैं। सिर्फ इसलिए कि आप एक क्षेत्र में कुशल हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि आप दूसरे क्षेत्र में भी कुशल हैं। इसलिए, आपको अपने विश्वदृष्टिकोण और अपने मूल्यों के साथ संपर्क में आने की ज़रूरत है और यह भी कि बाइबल उन्हें कैसे सूचित करती है।

और अपने सवाल भी लेकर आएँ। उदाहरण के लिए, जेनेटिक इंजीनियरिंग। सभी डॉक्टरों को भ्रूण के ऊतकों और उससे जुड़ी सभी तरह की चीज़ों से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

जेनेटिक इंजीनियरिंग के बारे में क्या? आप इसे निर्णय लेने वाले ब्लॉक में कैसे लाते हैं? और आपको किस तरह की चीज़ों के बारे में सवाल पूछने हैं? क्योंकि बाइबल में इसके बारे में कोई प्रमाण पाठ नहीं है। इसलिए, चिकित्सा में एक ईसाई नेता के रूप में, आपको इस पर विचार करने की आवश्यकता है। शायद आप इस पर एक लेख भी लिख सकते हैं कि ईसाई विश्वदृष्टि और मूल्य जेनेटिक इंजीनियरिंग से कैसे संबंधित हैं।

खैर, बाइबल पर शोध करने के लिए मुझे जितना पता है, उससे कहीं ज़्यादा शोध की ज़रूरत होगी। उदाहरण के लिए, मैं तुरंत कुछ ईसाई दार्शनिकों से बात करने के बारे में सोचूंगा, जिनके पास इस तरह के शोध करने और बाइबल के पाठ को रचनात्मक निर्माण में लाने के बारे में ज़्यादा सहज ज्ञान होगा। ऐसा करना एक बढ़िया काम हो सकता है।

इसलिए, हम सभी को निर्णय लेने की प्रक्रिया को लागू करने की आवश्यकता है। मैंने आपको सूचियाँ दी हैं। आपके पास अपनी सूची है। कृपया इन बातों पर विचार करें।

मैंने आपको इस विशेष चार्ट में एक और चार्ट दिया है। यह वही है, लेकिन यहाँ एक और है। यह चार्ट, जिसे आपको बड़ा करना है, कुछ ऐसा है जिसे आप बस पढ़ते हैं और देखते हैं। मैं इसे इस एकल स्लाइड की तरह बड़ा करता हूँ ताकि मैं इसे देख सकूँ।

मुझे लगता है कि यह बहुत मददगार है। मैं अपने छात्रों से कक्षा में ऐसा करने को कहता था। यह निर्णय लेने संबंधी केस स्टडी लिखने की एक प्रक्रिया है।

जब आप कोई ऐसा निर्णय ले रहे होते हैं जो वाकई बहुत गंभीर होता है, तो कभी-कभी केस स्टडी लिखते समय आप क्या करते हैं? खैर, बाई ओर, आप स्पष्ट रूप से मूल्यांकन किए जाने वाले निर्णय को बताते हैं। आपको इसे लिख लेना चाहिए। इसे लिख लें।

जब मैं प्रचार करता हूँ, तो मैं हमेशा जिस व्यक्ति से बात कर रहा होता हूँ, उसे बाइबल पढ़ने के लिए कहता हूँ। मैं उन्हें बाइबल का पाठ पढ़ने के लिए कहता हूँ। हालाँकि, मैं बाइबल का पाठ उद्धृत नहीं करता।

मैं उन्हें इसे पढ़ने के लिए मजबूर करता हूँ। क्यों? हो सकता है कि यह उनके दिमाग में बैठ जाए। हो सकता है कि यह वापस आकर उन्हें परेशान करे।

मुझे नहीं पता कि भगवान इसका इस्तेमाल कैसे करेंगे, लेकिन मैं उन्हें इस पर अपनी नज़र रखने के लिए मजबूर करता हूँ। और कभी-कभी, किसी निर्णय से निपटने के दौरान, हम सिर्फ़ कागज़ के एक टुकड़े पर खुद को उंडेल कर बहुत कुछ सीख जाते हैं। हम खुद को उस नज़र से देखना शुरू कर देते हैं जिसे हमने पहले नहीं देखा था।

इसलिए, आप निर्णय को मूल्यांकन के लिए रख देते हैं। आप उस निर्णय में शामिल मुद्दों को परिभाषित करते हैं और यदि आप कर सकते हैं, तो आप विवरण को स्पष्ट करने के लिए एक केस स्टडी, एक कहानी बनाते हैं। आपने इन्हें विभिन्न विषयों में देखा है।

दूसरा, आप निर्णय को उस निर्णय-निर्माण ग़्रिड के माध्यम से चलाते हैं जो मैंने आपको दिया है, और आप उन छोटे-छोटे प्रश्नों को बदल सकते हैं जो वहाँ हैं, उनका उत्तर दे सकते हैं, और उन्हें अलग-अलग तरीकों से बड़ा कर सकते हैं। आप इसे ग़्रिड के माध्यम से चलाते हैं। आप निर्णय से निपटने के लिए शोध करने के लिए प्रश्न उठाते हैं और उन्हें स्पष्ट करते हैं।

मैं गर्भपात के सवाल पर भी यही बात लागू होते हुए देख सकता हूँ। बाइबल में गर्भपात के बारे में कोई प्रमाण नहीं है, लेकिन तलाक के मामले में हमें निश्चित रूप से ईसाई विश्वदृष्टि को अपनाना होगा। डॉक्टरों को ट्रांसजेंडर मुद्दे का सामना करना पड़ता है।

हर किसी को, खास तौर पर चर्च में, लैंगिक भूमिकाओं का सामना करना पड़ता है, जिसमें महिलाएँ और पुरुष दोनों शामिल हैं। यह कैसे होना चाहिए? क्या महिलाएँ पादरी हो सकती हैं? तो, उनमें से हर एक के पास किसी न किसी तरह का पाठ है, कुछ में दूसरों की तुलना में ज़्यादा। कुछ अत्यधिक निहित हैं।

चिकित्सा समुदाय में चीजें अत्यधिक निहित होंगी, और फिर भी, इसे संबोधित करने के लिए रचनात्मक निर्माण होंगे। निर्णय से निपटने के लिए शोध के लिए प्रश्नों को स्पष्ट करें। जितना अधिक आप इसे देखेंगे, उतना ही आप इसे स्पष्ट करेंगे, और जितना अधिक आप बाइबिल के पाठ को खोजने की कोशिश करेंगे जो इसे संबोधित कर सकते हैं।

कभी-कभी, आप एक कॉनकॉर्डेंस का उपयोग कर सकते हैं, और शब्द आपको वहां तक ले जाएंगे क्योंकि शब्द समान हैं, लेकिन कई बार, शब्द आपको वहां तक नहीं ले जाएंगे। आपको अवधारणाओं तक पहुंचना होगा, और इसके लिए एक अलग तरह की किताब की आवश्यकता हो सकती है जिसमें आप विषय-सूची देख सकते हैं और इसके बारे में पढ़ सकते हैं। शायद किसी तरह की धर्मशास्त्र की किताब, इस बात पर निर्भर करती है कि प्रश्न क्या है।

निर्णय ग्रीड के साथ मिलकर उठाए गए प्रश्नों पर शोध करें। अपने निष्कर्षों को निर्णय लेने वाले ग्रीड में वापस लाएँ और हाँ, नहीं, इत्यादि के माध्यम से काम करें। पक्ष और विपक्ष की सूची बनाएँ और विचार करें।

जैसे-जैसे आप उस निर्णय के बारे में अपनी सोच में परिपक्व होते हैं, वैध निर्णय लेने के परिदृश्य में आपके सामने आने वाले विकल्पों को लिखित रूप में बताएं। उन विकल्पों के माध्यम से काम करें। शायद कुछ विकल्पों को हटा दें, लेकिन उन विकल्पों से निपटें।

मुझे वहां एक टाइपो दिखाई देता है। लिखित में बताएं, निर्णय लें और उस निर्णय को बार-बार दोहराते रहें। यह आपको सोचने के लिए प्रेरित करने की एक सरल प्रक्रिया है। आपके पास सोचने के लिए विषय-वस्तु है, और आपको उस विषय-वस्तु पर निर्णय लेना है, लेकिन 10 में से नौ बार, आप एक ऐसा प्रश्न पूछने जा रहे हैं जिसका उत्तर देने के लिए बाइबल में कोई सीधा पाठ नहीं है, इसलिए आपको बड़ी श्रेणियों में सोचना चाहिए, लेकिन आप यह सोचने की हिम्मत न करें कि भगवान को परवाह नहीं है क्योंकि यह बाइबल में नहीं है।

ठीक है, तो यह रहा। मेरे मॉडल का सारांश, और आपने यह काफी सुना है। हमारे सामने आने वाले मुद्दों पर बाइबल आधारित सोच लाकर निर्णय लिए जाते हैं।

यह परिवर्तित मन की प्रक्रिया है। सभी मनुष्य अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों से विवेक करते हैं। यह बाइबिल का घटक है जो विश्वासियों को दिव्य बढ़त देता है।

हमारा विश्वदृष्टिकोण और मूल्य हमें ईश्वर को प्रसन्न करने के मामले में बढ़त देते हैं, लेकिन सभी मनुष्य, मुझे परवाह नहीं है कि आप कौन हैं, आपका धर्म क्या है, आपका दर्शन क्या है, आप अभी भी ऐसा करते हैं, और आप एक ईसाई के रूप में जानते हैं कि वे ऐसा करते हैं, इससे आपको उनके साथ संवाद करने में मदद मिल सकती है। हमारा काम ईश्वर की इच्छा को खोजना नहीं है, बल्कि उसे पूरा करना है। चुनने की हमारी स्वतंत्रता हमारी प्रकृति और हमारे विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों को लागू करने से निर्धारित होती है।

खैर, यह दूसरा भाग है, और मैंने अलग-अलग कोणों से चीजों को कवर किया है। और मुझे उम्मीद है कि अब तक आपको यह समझ में आने लगा होगा कि एक विश्वदृष्टि और मूल्य मॉडल आपके द्वारा लिए जाने वाले निर्णयों को कैसे संसाधित करता है और आपके लिए प्रत्येक विशेष वस्तु के साथ शास्त्र को उस भूमिका में लाना कितना आवश्यक है। अब, जिन चीजों में बहुत से लोगों की सबसे अधिक रुचि है, वे विषय और चुनौती से संबंधित हैं, और मैं आपसे विवेक के बारे में बात करने, आत्मा की भूमिका के बारे में बात करने, प्रार्थना के बारे में बात करने में सक्षम होने के लिए बहुत खुश हूँ, और मैं प्रोविडेंस पर काम कर रहा हूँ, यह एक नया घटक है, इसे एक अलग पैकेज में रखना है, और मुझे उम्मीद है कि यह हो जाएगा ताकि मैं इसे अपने व्याख्यानों में भी शामिल कर सकूँ। तो, कृपया समय से पहले उन हैंडआउट्स को पढ़ें, अंशों को देखें, और हमारे साथ बिताए समय को आपके लिए अधिक लाभदायक बनाएँ क्योंकि मैं विवेक और इसी तरह के मुद्दों पर चर्चा करता हूँ।

आपके ध्यान के लिए धन्यवाद, और मुझे विश्वास है कि आपका दिन अच्छा रहेगा।